ॐ

सत्नाम साक्षी

सर्वानन्द सन्देश

प्रकाशकः
स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज
प्रेम प्रकाश मण्डल (ट्रस्ट)
श्री अमरापुर स्थान, जयपुर-302001

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशकः
स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज
प्रेम प्रकाश मण्डल (ट्रस्ट) 01
श्री अमरापुर स्थान, जयपुर-3020

कॉपीयां : 1,000

मार्च-2011

भेटा : 30/-

मुद्रक :
गणपति, जयपुर
फोन: 9828112907

ॐ श्री सत्‌नाम साक्षी

भूमिका

एक समय गुरु महाराज की मण्डली और वाधूराम केस्वाणी दिल्ली से बम्बई आ रहे थे। रास्ते में प्यारे वाधूराम ने कहा, स्वामीजी। आप कृपा करके हमारे और सारे संसार के मनुष्य मात्र के कल्याण के लिये हर रोज सुबह को अपने अनुभव के चार वचन शिक्षा के लिख देवें तो हम बड़े प्रसन्न होंगे। मैंने कहा कि इसमें तकलीफ तो होगी परन्तु आप सन्तों के

और देश के प्यारे हैं इसलिये हम लिखेंगे जब तक लिख सके।

– सर्वानन्द

सद्‌गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज के अनुभव के वचन, जो उन्होंने स्वयं लिखे थे, यहां दिये जा रहे हैं साथ ही प्रस्तुत संस्करण में पूज्य महाराज श्री के सत्संग प्रवचनों में से कुछ और शिक्षाप्रद वचन जोड़कर 365 की संख्या पूरी की गई है ताकि वर्ष भर प्रत्येक दिन वचन पढ़कर प्रेमी जिज्ञासु लाभ उठा सकें।

ॐ शान्ति।

ॐ श्री सत्नाम साक्षी

❊ प्रार्थना ❊

हे परमपिता समर्थ बाबा ! सच्चिदानंदघन !
परिपूर्ण परमात्मा ब्रह्माण्ड नायक !
सदा सुखदायक ! अविनाशी !
घट घट वासी ! स्वयं प्रकाशी !
सब सुख राशी ! सच्ची सुमति देना ।
स्वांग की लज्जा रखना।
नगर बन में रक्षा कीजे।
अभय दान प्रभु सबको दीजे॥
देश - परदेश दासों-
बच्चों की रक्षा करना।
धर्म की लज्जा रखना।
अपनी चलती चलाना॥

अन्तकाल सुहेली करना।
तन-मन-धन वाणी करके।
मेरे द्वारा किसी की दिल दुःखी न होवे।
सिर धर आयुस करूँ तुम्हारा।
परम धर्म ये नाथ हमारा॥
सुत अपराध करत है जेते,
जननी चीत न राखत तेते॥
जैसे बालक भाव स्वभावे,
लख अपराध कमावे।
कर उपदेश झिण के बहु भान्ती,
बहुरि पिता गल लावे॥
सत्‌गुरु तुम पूरन करो,
मेरी यह अरिदास।
कहे टेऊँ मन में कभी,

रहेन जग की आस॥
आशवन्दी गुरु तोदरि आई,
तुम बिन ठौर न काई।
तूं हरि दाता तूं हरि माता,
मेरी आश पुज़ाईं॥
पाइ पलउ मैं पेर पियादी,
आयसि हेत मंझाईं।
तन मन धन अरिदास करेमैं,
मांगत नामु सनेही॥
नामु तुम्हारा साबुन करिसां,
धोसां पाप सभेई।
कहे टेऊँ गुरु लोक तीन में,
आवागमन मिटाईं॥
ॐ शांति! शांति!! शांति!!!

VIII
Plain

1 जनवरी

सारे मनुष्य संसार में सुख को ढूण्ढ रहे हैं। वह सुख उनका स्वरूप ही है।

2 जनवरी

व्यवहार अथवा परमार्थ
में पुरुषार्थ करना चाहिये।
पुरुषार्थी की जय है।

3 जनवरी

**भगवान के नाम, सत्
शास्त्रों, सन्त सत्गुरु के
वचन में विश्वास और
श्रद्धा करो, यही मोक्ष का
सबसे बड़ा साधन है।**

4 जनवरी

थोड़ा बोलना चाहिये। व्यर्थ कभी नहीं। कार्य मात्र बोलना ही वाणी का संयम है। ''चुप जैसी मीठी नहीं, वस्तु इसी जग माहिं।''

5 जनवरी

सत्य बोलना मनुष्य का भूषण है। अपने सुख–स्वार्थ के लिये झूठ नहीं बोलना।

6 जनवरी

क्रोध कभी नहीं करना
चाहिये। क्रोध करने
से दान–पुण्य, व्रत,
जप– तप, आदि शुभ
कर्म नाश हो जाते हैं।

7 जनवरी

जीव मात्र पर दया
करना मनुष्य का
मुख्य कर्त्तव्य है।

8 जनवरी

जैसा अन्न तैसा मन। तमोगुणी आहार से मन तामसी, रजोगुणी आहार से राजसी और सतोगुणी आहार से मन सात्त्विक होगा।

9 जनवरी

जिसने त्याग किया है उसे ही परमपद की प्राप्ति हुई है, संसार में वही यशस्वी और पूज्य है।

10 जनवरी

जो मनुष्य अपने को मुसाफिर समझता है और यह सोचता है कि मैं संसार की सराय में दो दिन का मेहमान हूँ, मुझे यहाँ गुज़रान ही करना है, वह कभी भी दुखी नहीं होगा।

सर्वानन्द सन्देश

11 जनवरी

जिसने मन को अपने वश में कर लिया उसने सारे संसार पर विजय प्राप्त कर ली, दुनिया में वह धन्य है। उसका कोई भी दुश्मन नहीं रहा।

सर्वानन्द सन्देश

12 जनवरी

अनात्म अभिमानी से चाण्डाल अच्छा है क्योंकि वह अपने को गन्दगी से अलग समझता है। देह अभिमानी अपने आप को ही शरीर समझता है।

13 जनवरी

आप किसी से भलाई
करो तो वह भुला देना
परन्तु जो कोई आपसे
भलाई करे तो वह
कभी नहीं भूलो।

14 जनवरी

यह मन मरने को जानता है परन्तु मानता नहीं और भगवान को मानता है परन्तु जानता नहीं।

15 जनवरी

प्रत्येक मनुष्य को भोजन थोड़ा खाना चाहिये। रात्रि को आधा भोजन करना अच्छा है। इससे विवेक शक्ति और आयु बढ़ेगी। अनाज बचेगा, देश की सेवा होगी, और भी कई लाभ हैं।

सर्वानन्द सन्देश

16 जनवरी

सबसे गुण उठाना चाहिये। जैसे भंवरे, मधु–मक्खियां व हंस पक्षी सार को ग्रहण करते हैं। उसका अवगुण वो जाने, आप गुणग्राही बनो। यह बात ध्यान में रखकर अपने चित्त को प्रसन्न रखो।

सर्वानन्द सन्देश

17 जनवरी

सच का व्यवहार करना सारे मनुष्यों का परम धर्म है। सच की कमाई का एक रुपया पाप की कमाई के पांच रुपयों से अधिक अच्छा है।

18 जनवरी

बड़े आदमियों से मित्रता करो। छोटे, गरीबों पर दया करो। ऐसा करने से आपका चित्त सदैव प्रसन्न रहेगा।

सर्वानन्द सन्देश

19 जनवरी

वक्त का पाबन्द रहना
सबके लिये सुखदाई है।
किसी को दस बजे अमुक
स्थान पर मिलने का
टाइम दिया हो तो उस
समय से पांच मिनट पहले
वहां पहुंच जाओ।

20 जनवरी

जो मनुष्य अपना स्वार्थ छोडकर गरीब, दुखी, अनाथ और देश की सेवा करता है, उसका जीवन सफल और धन्य है।

21 जनवरी

मौके के दान, तीर्थ स्नान, गरीब, अनाथ, भगवान, सन्त और देश की सेवा से बडा फल मिलता है। विद्या पढ़ना और भजन करना इत्यादि मौके का प्रत्येक कार्य अधिक फलता है।

सर्वानन्द सन्देश

22 जनवरी

सुख–दुख,मान–अपमान,
स्तुति–निन्दा, गर्मी–सर्दी
इत्यादि द्वन्द्वों को सहन
करना मनुष्य का
भूषण है।

23 जनवरी

बिना कारण किसी भी
जीव को नहीं दुखाना,
यही मनुष्य का धर्म है।
दिल रूपी मन्दिर में
दिलदार ''प्रभु'' रहता है।

24 जनवरी

साधु, ब्राह्मण आदि सारे मनुष्यों को भगवान का भोजन अपने अधिकार के अनुसार काम (सेवा) करके खाना चाहिये। मुफ्त खाना धर्म नहीं है।

25 जनवरी

जो मनुष्य सदैव अपने को मुसाफिर जानता है और यह सोचता है कि मुझे संसार रूपी मुसाफिरखाने में गुज़रान ही करना है, वह कभी दुःखी नहीं होगा।

सर्वानन्द सन्देश

26 जनवरी

शरीर का अभिमान छोड़कर सन्तोष और धैर्य धारण करो। ऐसा करने वाले पर भगवान प्रसन्न होते हैं।

27 जनवरी

इस मनुष्य को परलोक बनाना चाहिये। एक परलोक तो वह है जहां हमें मरकर जाना है। और दूसरा परलोक बुढ़ापा है, उसे भी बनावें।

सर्वानन्द सन्देश

28 जनवरी

जो दरवाजे के अन्दर

आवे उसे सम्मान दें।

यही सबसे बड़ा दान है।

29 जनवरी

बार–बार अपने मन को समझाना, सत्शास्त्र, संत और गुरु के वचन में विश्वास बंधाना और प्रभु का नाम स्मरण करना, यही भगवान की सच्ची भक्ति है।

सर्वानन्द सन्देश

30 जनवरी

दूसरों का यश सुनकर

ईर्ष्या से नहीं जलना

चाहिये।

31 जनवरी

शरीर जर्जर हो गया।

देह महल में बैठ के,

कीनी मौज महान।

अब तो यह पुराना भया,

करना है गुज़रान।।

1 फरवरी

भावना है स़फा

तो सभी है ऩफा।

भावना है बद

ते सौदा है रद्द।

भावना शुद्ध रखो।

2 फरवरी

जो बात सुनो या देखो

उसका विचार करो।

बिना विचारे चित्त को

दुःखी न करो।

3 फरवरी

जो समय गुज़र जावे उसका पश्चात्ताप नहीं करना। चित्त को प्रसन्न रखो, दुःखी मत हो।

4 फरवरी

यदि सुख को चाहो तो

दुःख से मत डरो,

क्योंकि सुख है ही

दुःख के अन्दर।

5 फरवरी

मान और स्वार्थ को
छोड़कर मेलाप करो।
इससे सर्व दुखों को
निवृत्ति और परमानन्द
की प्राप्ति होगी।

6 फरवरी

जो मनुष्य जगत में जीते

ही मरा है उसे काल नहीं

मारेगा। मरना क्या है ?

अहंकार को त्यागना।

7 फरवरी

दुनिया में मनुष्य वही है जो सुख–दुःख में एक समान रहता है। उसका संग करना सदैव सुखदाई है।

8 फरवरी

लोभ लालच में पड़कर

अपना भेष और धर्म नहीं

बदलना चाहिये।

९ फरवरी

दुनिया में बिगाड़ने वाले बहुत हैं। बनाने वाले थोड़े हैं। बनाने वाला भगवान का साक्षात् स्वरूप है।

10 फरवरी

यह सारा संसार संकल्प का रचा हुआ है जैसे स्वप्न के पदार्थ देखने में आते हैं पर हैं नहीं।

11 फरवरी

जिस मनुष्य के दिल में
दया नहीं है वह पशु से
भी नीच है, नीच से
भी नीच है।

12 फरवरी

अधर्मी और भंयकर देश में नहीं रहना चाहिये। वहां भजन नहीं होगा और धर्म भी नहीं रहेगा।

13 फरवरी

दैत्य और देवताओं का कोई अलग प्रांत या देश नहीं है। जिसमें आसुरी सम्पदा के गुण हैं वह दैत्य है और जिसमें दैवी सम्पदा के गुण हैं वह देवता है।

14 फरवरी

यह जीव सत्‌चित् आनन्द स्वरूप है। इसमें दुःख का लेश भी नहीं है। परन्तु इसने आपही दुःख खरीद किया है।

15 फरवरी

अनात्म अभिमानी ही यमपुरी में जाकर धर्मराज को लेखा देता है। जिसने अहम् त्याग दिया है, वह नहीं।

16 फरवरी

मूर्ख का संग सदा दुःखदाई
है, इससे मरना अच्छा है।
विवेकी पुरुष का संग
सदा सुखदाई है।

17 फरवरी

संसार में जो मनुष्य
अपना ही सुख चाहता है,
वह मरा हुआ है। मगर जो
दूसरों का सुख चाहता
है, वह जिन्दा है।

18 फरवरी

जिस मनुष्य को अपने धर्म का पता नहीं है, वह सूरदास है। वह जहां जाएगा वहां ठोकरें खाकर दुःख ही पाएगा।

सर्वानन्द सन्देश

19 फरवरी

परमात्मा सर्व में है,

जीव मात्र की सेवा करना

उसी की ही सेवा है।

20 फरवरी

जैसा अन्न तैसा मन।
तमोगुणी आहार से मन
तामसी, रजोगुणी से
राजसी और सतोगुणी
से सात्त्विक होगा।

21 फरवरी

संसार स्वप्न और सिनेमा

के समान है। देखने में

आता है परन्तु है नहीं।

22 फरवरी

बाहर की तलवार का
वार एक से दो कर देता
है। परन्तु प्रेम की तलवार
दो को मिलाकर एक
कर देती है।

23 फरवरी

जिसने यौवन में मन

इन्द्रियों को जीतकर

अपने वश में किया है,

वह धन्य है।

24 फरवरी

संसार की इच्छाओं को जलाओ तो आत्म स्वराज्य प्राप्त होगा, जो कभी नष्ट नहीं होता।

25 फरवरी

अधिकारी बिगर दान देने

वाले या लेने वाले दोनों

के लिये दुःखदाई है।

फलीभूत नहीं होगा।

26 फरवरी

इस जीव ने यहां आकर जो मित्र और संगी बनाये हैं उन्हें यहां ही छोड़ कर चला जायगा। कोई सच्चा साथी नहीं है।

27 फरवरी

जिसको कुछ बनाना है तो

वह अभी जीते जी बनावे।

मरने के पीछे कुछ भी

नहीं बनेगा।

28 फरवरी

जिसे भगवान को देखने

की इच्छा है वह पहले

अपने आप को देखे।

1 मार्च

यह जीव सत् चित् आनन्द स्वरूप है, इसमें दुःख का लेश भी नहीं है। अपने अज्ञान से भूलकर महादुखी होकर रो रहा है।

2 मार्च

देहधारी गुरु के बिगर
आत्मज्ञान नहीं होगा।
अगर होगा तो फलदायक
नहीं होगा और शान्ति
नहीं मिलेगी।

3 मार्च

जो मनुष्य मान और
स्वार्थ को छोड़ेगा वह
देश व गरीबों की सेवा
कर सकेगा।

4 मार्च

सत्य व मीठा बोलने वाला मनुष्य देश व परदेश जहां भी जायेगा, वहां सुख ही पायेगा। दुःख कहीं नहीं।

5 मार्च

जिस देश या घर में

संगठन, एकता व प्रेम–

प्यार है वह देश या घर

सदैव बसता रहेगा।

6 मार्च

मनुष्य जन्म खाने–पीने

या सोने के लिए नहीं

परन्तु भगवान से मिलने

के लिए मिला है।

7 मार्च

रजोगुण दुःख का कारण है। सत्व गुण सुख का हेतु है।

8 मार्च

जिस मनुष्य ने मन को
जीता उसने सारे संसार
को जीत लिया।

9 मार्च

नासमझ आदमी आप भी

दुःख पाता है और दूसरों

को भी दुःख देता है।

उसका संग मत करो।

10 मार्च

जिसको भगवान से मिलना है तो वह पहले सन्त, गुरु से मिले।

11 मार्च

पुनर्जन्म अज्ञानी के लिए है, ज्ञानी के लिए नहीं, इसमें रहस्य है।

12 मार्च

वास्तव में जन्म–मरण

अज्ञान में है।

'शिवोऽहम्'।

13 मार्च

हरि की माया बड़ी विचित्र है। जिसने सब जीवों को मोहित करके बांध लिया है।

14 मार्च

जिसको पुत्र नहीं है वह तो रो रहा है परन्तु जिसको पुत्र है वह भी रो रहा है। अब क्या करिये ? क्या कहिये ?

15 मार्च

यह संसार मदारी के खेल

और सिनेमा के समान है,

कुछ है नहीं।

सर्वानन्द सन्देश

16 मार्च

किसी भूले भटके को

मार्ग बताकर सीधे रास्ते

लगाना बडा पुण्य कै।

17 मार्च

हमने देखा है कि जिनको इच्छा है उन्हें कोई नहीं देता, परन्तु जिन्हें इच्छा नहीं है उन्हें सब देते हैं।

18 मार्च

दुनिया में कोई भी पदार्थ दुःखदाई नहीं है। इस जीव की इच्छा ही दुःखदाई है।

19 मार्च

चाहना ही नहीं तो चिन्ता किस बात की। निश्चिंत मन वाला बेपरवाह होता है। वही राजाओं का राजा है।

20 मार्च

सिनेमाओं का सुधार करना चाहिये। नहीं तो नास्ति (बर्बादी) का कारण बनेंगी।

21 मार्च

हम सब भारत की सन्तान

हैं इसलिए वैर–विरोध

छोड़कर आपस में

प्रेम–प्यार करें।

22 मार्च

जीव का कर्म और धर्म ही परलोक का संगी है और कोई नहीं।

23 मार्च

बहुत जीने से कोई फायदा नहीं, जल्दी मरने से भी कोई फायदा नहीं। फायदा है कुछ करने में। वह करो।

24 मार्च

भगवान संसार को

खुशी से बनाकर

अब फंस गया है।

25 मार्च

दुनिया में बिगाड़ने

वाले बहुत हैं, बनाने

वाले थोड़े हैं।

26 मार्च

मनुष्य बड़ा बने तो सहारा करे और छोटा बने तो आज्ञा माने। यह दोनों के लिए अच्छा है।

27 मार्च

जो जीते मरा है, उसको काल नहीं मारेगा, वह अमर है।

28 मार्च

समय–समय का अपना प्रभाव होता है। यह विवेकी पुरुष जानते हैं।

29 मार्च

जिस कार्य में पहले सुख

देखने में आता है उसका

परिणाम दुःख होता है।

जिसका अन्त नहीं।

30 मार्च

जिस कार्य में पहले दुःख

देखने में आता है उसका

परिणाम सुख होता है।

31 मार्च

मनुष्य जो कार्य

प्रारम्भ करे उसे

अवश्य पूर्ण करे।

1 अप्रेल

अपने–अपने धर्म में

रहना चाहिये। अपना

धर्म ही सुखदाई है।

2 अप्रेल

पुरुषार्थ ही दैव है

इसलिए पुरुषार्थ करो।

पुरुषार्थी की जय है।

3 अप्रेल

अब सारा व्यवहार

फैशन का हो गया है।

फैशन से देश फना

(बर्बाद) हो गया है।

4 अप्रेल

आज कल के लोगों को
सिनेमा, सिगरेट, पान,
सुपारी और चाय के
अलावा कहीं भी सुख
देखने में नहीं आता है।

5 अप्रेल

आप अपनी तरफ से

सबकी भलाई करते रहो।

उनकी गति वे ही जानें।

6 अप्रेल

जिसको प्रेम–श्रद्धा

नहीं है उसको

उपदेश नहीं करना।

सर्वानन्द सन्देश

7 अप्रेल

बहनी, सहनी, कहनी,

रहनी जिस मनुष्य में ये

चार गुण हैं उसे जल्दी ही

सत् पद की प्राप्ति होगी।

8 अप्रेल

अपने धर्म को छोड़कर

दूसरे धर्म में जाना

पाप है।

9 अप्रेल

आप सच्ची भक्ति और
सेवा करते रहो उसमें
कोई दुःख आवे या
निन्दा हो तो
घबराओ मत।

10 अप्रेल

आपको परमात्मा ने जो कुछ धन आदि दिया है, वह सब में बांट कर खाओ। यदि सब में नहीं तो पड़ौसियों में बांट कर खाओ, अकेले नहीं।

11 अप्रेल

अपने आप को जानना

ही भगवान को पहचानने

की कुंजी है।

12 अप्रेल

यह जीव सत् चित

आनन्द स्वरूप ईश्वर

का अंश है।

13 अप्रेल

राम रामेति सब घट में

रम रहा है विवेकी उसे

देख रहे हैं।

14 अप्रेल

ये सब विष्णु भगवान हैं

पर अज्ञानी नहीं देखते।

15 अप्रेल

जो मुझ में है,

सो तुझ में है।

जो तुझ में है,

सो सब में है।।

16 अप्रेल

भगवान ही एक से अनेक

हुआ है तो भी एक ही है,

भूलो मत।

17 अप्रेल

प्रभु से प्रार्थना करो कि,
हे भगवान! मेरे द्वारा
तन, मन या वाणी
से किसी की दिल
दुःखी न हो।

18 अप्रेल

दुःख में घबराना नहीं,

पुरुषार्थ करना।

19 अप्रेल

सारे पदार्थ पुरुषार्थी

के लिए हैं। आलसी

के लिये नहीं।

20 अप्रेल

जो मरने से पहले

मरा है उसे काल नहीं

मार सकता।

21 अप्रेल

रूठना चाहिए या नहीं ?

रूठना तो अच्छा है परन्तु

जिसमें फायदा हो।

22 अप्रेल

संसार के कार्य तो कभी
भी समाप्त नहीं होते।
एक समाप्त हुआ ही
नहीं कि दूसरा काम
सामने खड़ा है।

23 अप्रेल

साक्षी चेतन के प्रकाश

से सारा विश्व

चमक रहा है।

सर्वानन्द सन्देश

24 अप्रेल

जो मनुष्य बल होते

निर्बल रहता है

वह धन्य है।

25 अप्रेल

जैसा संग तैसा रंग।

इसीलिए अच्छा संग

करना चाहिए।

26 अप्रेल

बड़ा बनना चाहते

हो तो छोटे बनो।

27 अप्रेल

जिसने यौवन में मन,
इन्द्रियों को जीता है
वह पुरुष पुरुषोत्तम
का रूप है।

28 अप्रेल

दूसरों को समझाना सुगम है। अपने आप को समझाना बड़ा कठिन है।

29 अप्रेल

संसार में मन जैसा कोई

शत्रु नहीं है पर मन जैसा

मित्र भी कोई नहीं है।

30 अप्रेल

नफे की दावा (लालच)

छोड़ो तो घाटा कभी

पड़े ही नहीं।

1 मई

वैराग्य के बिगर भगवान

की इस माया से कोई भी

छूट नहीं सकेगा।

2 मई

दुःखों की निवृत्ति

आत्मज्ञान के बिगर

नहीं होगी।

3 मई

अज्ञानी मनुष्यों से

पशु–पक्षी भी अच्छे हैं,

उन्हें जैसे सिखाओ,

वैसा करते हैं।

4 मई

त्याग, तितिक्षा, शुक्र
और सब्र फकीरी के
भूषण हैं।

5 मई

दूसरे के दुःख में दुःखी

मत हो, सेवा और

पुरुषार्थ करो।

6 मई

यह सारा संसार स्वार्थ

का है। दुःख में कोई

किसी का नहीं है।

7 मई

भगवान अनन्य प्रेमी

भक्त को दुःख, गरीबी

और निन्दा, ये सौगात

पहले ही देता है।

8 मई

संसार में बिना मतलब

कोई किसी का संगी

नहीं है।

९ मई

मनुष्य जन्म में ही

भगवान का दर्शन करो।

चौरासी लाख योनि

में नहीं होगा।

10 मई

भगवान का दर्शन करो,

भगवान आपके निकट

आया है, अन्य योनियों

में आपसे दूर हो जायेगा।

11 मई

जिज्ञासु के लिए गुरु–मंत्र के समान अन्य कोई मंत्र नहीं है।

12 मई

आत्मराम का दर्शन
इन्द्रियों का विषय नहीं
है, अनुभव से होगा।

13 मई

मूर्ख आदमी हित का

वचन मानता नहीं है।

14 मई

पहले अपने आप को

समझाओ, दूसरों

को बाद में।

सर्वानन्द सन्देश

15 मई

जो जिज्ञासु गुरु भक्ति

करता है वह चौरासी

में नहीं जायगा।

16 मई

शान्ति को चाहते हो तो

अपने शरीर व इन्द्रियों

को शान्त (स्थिर) करो।

17 मई

अच्छे लक्षणों और

स्वभावों वाले को ही

सन्त या महात्मा कहते हैं।

18 मई

इस जीव की प्रारब्ध
में जो लिखा है वह
अवश्यमेव भोगना
पड़ेगा।

19 मई

शुभ मार्ग में उठाया हुआ

कदम निष्फल नहीं होता।

20 मई

जो रास्ता लेकर पूछता
जाता है वह अपने लक्ष्य
पर जल्दी पहुंचेगा।

21 मई

शुभ कार्य करने

में आलस्य

मत करो।

22 मई

निष्काम कर्म बन्धन

का हेतु नहीं है।

23 मई

जिसको गरीब–अनाथों और देश की सेवा करनी हो वह पहले मान और स्वार्थ को छोड़े।

24 मई

साक्षी चेतन की ज्योति
से सूर्य, चन्द्र, चौदह
लोक, पिण्ड, ब्रह्माण्ड,
सब प्रकाशित हो रहे हैं।

25 मई

आत्म देव ही महादेव है,
जिसकी तैतीस करोड़
देवता पूजा करते हैं
और उसकी आज्ञानुसार
चलते हैं।

26 मई

परिपूर्ण पारब्रह्म ही एक से अनेक हुआ है, तो भी एक ही है। जैसे सोने से भूषण, रुई से वस्त्र और मिट्टी से बर्तन।

27 मई

मन को आदती नहीं

बनाना चाहिए।

आदत ही दुःख देती है।

28 मई

हर एक मनुष्य को प्रातःकाल सवेरे उठना चाहिये। जिससे नेत्रों में रोशनी और विवेक शक्ति बढ़ेगी।

29 मई

रात्रि को भोजन थोड़ा खाना चाहिये। जिससे आयु और बुद्धि बढ़ेगी। अनाज बचेगा और देश की सेवा होगी।

30 मई

आत्मा अन्दर–बाहर

आकाश जैसे व्यापक है,

जिसमें आना, जाना,

घटना, बढ़ना आदि

नहीं है।

31 मई

यह त्रिगुणी माया ईश्वर से पैदा हुई है और फिर इसने ईश्वर को ही ढाप लिया है।

1 जून

भगवान की माया बड़ी प्रबल है सारे जीवों को मोह रूपी जाल में ऐसा फंसाया है जो निकल नहीं सकते।

2 जून

जैसे सेंवर (काई) पानी

को ढाप लेती है वैसे ही

योग माया ईश्वर को

ढाप लेती है।

3 जून

श्रवण का सम्पूर्ण फल तब होगा जब मनन और निदिध्यासन करेंगे।

4 जून

सत्य के आधार पर सारा ब्रह्माण्ड स्थित है। सत्य ही मनुष्य का जीवन है।

5 जून

जितना हो सके निर्भय

देश और पावन भूमि में

रहना चाहिये।

6 जून

पूर्ण सत्गुरु की प्राप्ति, सन्तों का संग और गंगा का किनारा भाग्य से मिलता है।

7 जून

विवेकी मनुष्य के लिये

गुलामी दुःखदायी है।

8 जून

ये निश्चय करो कि
जिसकी प्रारब्ध पूरी हुई,
वह नहीं रहेगा और
जिसकी है वह नहीं
जायगा।

९ जून

जो दूसरे का चित्त प्रसन्न करता है उसे चारों धाम करने का फल मिलता है।

10 जून

जो मनुष्य थोड़े में ही

खुश हो, उसे निराश

नहीं करना।

11 जून

संसार में मनुष्य देखने में बहुत आते हैं लेकिन मनुष्यता का आचरण करने वाले बिल्कुल थोड़े हैं।

12 जून

दुनिया में जितना सुख है उतना दुःख है। सुख के पीछे दुःख है और दुःख के पीछे सुख है।

13 जून

जिसको बच्चा नहीं है वह

रो रहा है परन्तु जिसको

है वह भी रो रहा है।

14 जून

आप सारे जीवों के

हितकारी बनो। सबका

भला करते रहो।

15 जून

आप भगवान की लीला

देखते रहो, चित्त को

दुःखी न करो।

सर्वानन्द सन्देश

16 जून

विश्वास के बिगर

व्यवहार या परमार्थ का

काम सिद्ध नहीं होगा।

17 जून

हे मेरे मन!

मालिक मत बनो।

अगर दावा रखोगे

तो दुःख पाओगे।

18 जून

आप यहां थोड़े समय के

लिये सैर करने आये हो।

खुश होकर जाओ।

19 जून

युग–युग का अपना प्रभाव होता है। इस कलियुग में रजोगुण प्रधान है। अशान्ति व बेआरामी बढ़ती जाती है।

20 जून

व्यवहार का अथवा परमार्थ का ज्ञान संग से ही होता है। जैसा संग वैसा रंग।

21 जून

जिसने चित्त का त्याग

किया है वह सर्वत्यागी है।

वह चाहे वन में रहे

या नगर में।

22 जून

थोड़े जीने के लिये पाप मत करो। किसी भी जीव को सताओ मत।

23 जून

भारतवासी वह है जो
शरण में आये हुए को
धिक्कारता नहीं। सबको
मित्र बनाना चाहता है।

24 जून

हे मेरे मित्रो!

आप सच्ची भक्ति, और

सेवा करते रहो, लोक

निन्दा से डरो मत।

25 जून

कोई मनुष्य आप के संग में आये तो उसे सुधारने की कोशिश करो, निकालने की नहीं।

26 जून

फकीरी धर्म, देश सेवा

और मनुष्य जन्म का

स्वांग पहनके उसे

लज्जाना नहीं, निभाना।

27 जून

इस जीव का किया हुआ पाप कर्म की यमदूत बनकर परलोक के मार्ग में इसे दुःख देता है और कोई नहीं।

28 जून

माताओं को अपने घर का काम, चक्की चलाना, चरखा कातना, भोजन बनाना आदि अपने हाथों से ही करना चाहिये।

29 जून

हे मेरे मन! अगर तुम

यश को चाहो तो

छोटे बन जाओ।

30 जून

सुनना, समझना और

कहना सुगम है परन्तु

उस पर स्थिति करना

(चलना) कठिन है।

1 जुलाई

श्रवण का फल मनन है,
मनन का फल
निदिध्यासन और
निदिध्यासन का फल
साक्षात्कार है।

2 जुलाई

अपने आप को देखना

चाहो तो देहधारी पूर्ण

सत्गुरु के पास जाओ।

3 जुलाई

जिसने आत्मतीर्थ किया है उसने चारों धाम कर लिये और सारे तीर्थ नहाय लिये।

4 जुलाई

भगवान के बगीचे में

आपको घूमने का

अधिकार है, फल फूल

शाखा तोड़ने का नहीं।

5 जुलाई

मूर्ख आदमी दूसरे को भी

दुःख देता है और आप

भी दुःखी रहता है।

6 जुलाई

गुरुमुख, धर्मात्मा, सज्जन पुरुष, संसार से जल्दी चले जाते हैं। पापी, दुष्ट बहुत समय जीते हैं।

7 जुलाई

परमात्मा न्याय तो

पूरा–पूरा करता है

परन्तु कुछ देर से। इसमें

आप घबराना नहीं।

8 जुलाई

देखने वाले को देखो,

जानने वाले को जानो

तो सारा खटका ही

खत्म हो जाय।

९ जुलाई

सारग्राही मनुष्य संसार

में सदैव सुखी

रहता है।

10 जुलाई

सौ जन्म के बाद भी

पाप–पुण्य कर्म का फल

भोगोगे। इसलिये

पाप मत करो।

11 जुलाई

जो कुछ परमात्मा ने धन

विद्या आदि दिये हैं वह

बांट कर खाओ।

12 जुलाई

आत्म ज्ञान का फल है

परम शान्ति और चित्त

सदैव प्रसन्न रहे।

13 जुलाई

आप सदैव सबके हित,

भलाई का बीज बोते

रहो, कभी न कभी

अवश्य फलेगा।

14 जुलाई

जितना हो सके अपने

हाथ से काम करो दूसरे

को मत कहो।

सर्वानन्द सन्देश

15 जुलाई

अभिमानी मनुष्य को

संत–गुरु का वचन

फलीभूत नहीं होगा।

16 जुलाई

मन को अन्तर्मुख स्थित

करना ही भगवान का

भजन है।

17 जुलाई

कार्य करने के पीछे जो

विचार आता है वह यदि

पहले आवे तो कभी

दुःख न होवे।

18 जुलाई

इस जीव को किसी ने

भी फसाया नहीं है। यह

आप ही लोभ–लालच

से फस गया है।

19 जुलाई

हर एक मनुष्य को

अपने धर्म, सन्मार्ग

में चलना चाहिये।

20 जुलाई

ब्रह्म ज्ञानी को भी

अन्य मनुष्यों के लिये

नीति–मर्यादा

रखनी चाहिये।

21 जुलाई

जो अपना मान छोड़कर

दूसरे का सम्मान करता

है, वह धन्य है।

22 जुलाई

शरीर को बहुत फैशन से मत सींगारो। दैवी सम्पद् के गुणों से सींगारो।

23 जुलाई

जिस गंदे शरीर पर गर्व
करते हो वह तो एक दिन
मिट्टी में मिल जायगा।

24 जुलाई

दुनिया में कहने वाले

मनुष्य बहुत हैं, करने

वाला कोई विरला है।

25 जुलाई

भगवान, गुरू और देश
की भक्ति करना सुगम है
परन्तु उसे निभाना
कठिन है।

26 जुलाई

सब दुःखों की निवृत्ति,

परमानन्द की प्राप्ति चाहो

तो अपनी दावा छोड़ो।

27 जुलाई

आप भक्ति, शुभ कर्म

का बीज बोते जाओ

कोई न कोई दाना

अवश्य उगेगा।

28 जुलाई

साक्षी चेतन अगामी,
अनामी, न दास न
स्वामी है। वह तेरा
निज स्वरूप है।

29 जुलाई

हर एक मनुष्य को

विपत्ति काल में धैर्य

करना चाहिये।

30 जुलाई

संसार में झगड़े फसाद अनादि काल से चले आते हैं। इनसे क्यों घबरायें।

31 जुलाई

परमात्मा सदैव तेरे

पास है। अपने को

अकेला मत मानो।

1 अगस्त

राम राज्य को चाहते हो

तो पहले स्वार्थ छोड़ो।

सत्यवादी बनो।

2 अगस्त

जो शुभ कार्य में पुरुषार्थ करता है, उसे भगवान सहायता देता है।

3 अगस्त

पहले अपनी फर्ज

अदाई करो। बाद में

कर्तार (प्रभु) करेगा।

4 अगस्त

परमात्मा से मिलना

चाहो तो दासों के भी

दास बन जाओ।

5 अगस्त

जितना हो सके अपनी

सेवा आप करो। दूसरों

को मत कहो।

6 अगस्त

यह संसार आपके ख़याल से बनता है, आपके ख़याल से स्थित है और आपके ख़याल से लय होता है।

7 अगस्त

सर्व दुःखों की निवृत्ति,

परमानन्द की प्राप्ति,

ब्रह्म ज्ञान के बिगर

नहीं होगी।

8 अगस्त

यह जीव सदैव यहां

रहना चाहता है,

पर रहेगा नहीं।

९ अगस्त

अपने आपको समझाने

जैसा कठिन काम दुनिया

में और कोई नहीं है।

10 अगस्त

सुख–दुःख, हर्ष–शोक

अन्तःकरण के धर्म हैं,

आत्मा के नहीं।

11 अगस्त

विवेक से वैराग्य होता है,

जो आत्म ज्ञान व जीवन

मुक्ति का हेतु है।

12 अगस्त

हर एक मनुष्य को

अपने लक्ष्य पर

पहुंचना चाहिये।

13 अगस्त

संसार में जीना अच्छा है,

लेकिन बेकार

(बिना काम के) नहीं।

14 अगस्त

दुनिया में शूरवीर वह है

जिसने मन–इन्द्रियों

को जीता है।

15 अगस्त

जो बननी है वह

अवश्यमेव बनेगी।

तुम साक्षी होकर

देखते रहो।

16 अगस्त

यौवनावस्था में जो नम्र

होता है, वह भगवान का

स्वरूप है।

17 अगस्त

सतोगुणी और अल्प

आहार से विवेक शक्ति

और आयु बढ़ेगी।

18 अगस्त

परमात्मा को एकदेशीय
नहीं मानना परन्तु
सर्वदेशीय व्यापक
जानना।

19 अगस्त

साक्षी चेतन सर्व को

देख रहा है, उसको

कोई विरला देखता है।

20 अगस्त

थोड़ा बोलने से

विवेक शक्ति और

शान्ति बढ़ेगी।

21 अगस्त

प्रातःकाल चार बजे

उठने से विवेक–शक्ति

और नेत्रों की

रोशनी बढ़ेगी।

22 अगस्त

सत्संग से विवेक शक्ति

और प्रभु से मिलने की

प्यास बढ़ेगी।

23 अगस्त

अहिंसा बड़ी फलदायक

और सुखदाई है, परन्तु

कहीं–कहीं पर हिंसा भी

कल्याणकारी होती है।

24 अगस्त

देश की सेवा हर एक

मनुष्य को यथा शक्ति

करनी चाहिये।

25 अगस्त

सच बोलना बड़ा धर्म है,

परन्तु कहीं–कहीं पर

झूठ बोलना भी

पुण्य होता है।

सर्वानन्द सन्देश

26 अगस्त

बबर शेर के समान इस

जीव को चाहना रूपी

चूहे ने ऐसा पकड़ा है,

जो छूट नहीं सकता।

27 अगस्त

सिनेमा को सुधारने
और क्लब व घोड़ों का
खेल बन्द करने से देश
के अन्दर महान्
शान्ति होगी।

28 अगस्त

तत्त्व वेत्ता, अभेदी,

निष्काम महात्मा इस

भारत का भूषण

(सींगार) है।

29 अगस्त

या तो यह कहो, सब मैं हूं

और या तो ये कहो, कि

मैं नहीं हूं। दोनों में से

एक निश्चय करो।

30 अगस्त

जो कुछ बोलना होता है,

वह द्वैत में, अद्वैत में नहीं।

(अद्वैत में) चुप।

31 अगस्त

रजोगुण और फैशन मत बढ़ाओ, ये दोनों दुःख के हेतु हैं।

1 सितम्बर

यह जीव दुनिया में दावा

रखकर दुःखी हुआ है,

नहीं तो दुःख कहां ?

2 सितम्बर

ये जो कुछ आप देख

रहे हैं, सो सब मन

का ही तमाशा है।

3 सितम्बर

सारी जिम्मेवारी बड़ों

पर है, छोटों पर नहीं।

छोटा होना अच्छा है।

4 सितम्बर

किसी भी कार्य की

चिन्ता नहीं करना,

पुरुषार्थ करना।

सर्वानन्द सन्देश

5 सितम्बर

जो जन्मा है वह मरेगा।

जो आया है वह

अवश्य जायेगा।

आत्मा अविनाशी है।

6 सितम्बर

अज्ञानी जीता है खाने के लिये और ज्ञानी खाता है जीने के लिये।

7 सितम्बर

विवेक, वैराग्य, वीरता
और विश्वास ये चारों
रत्न किसी बड़भागी
को ही मिलते हैं।

8 सितम्बर

प्रेम (लग्न) और रास्ते (विधि) के बिगर कोई भी लक्ष्य पर नहीं पहुंचेगा।

९ सितम्बर

आत्मा अविनाशी है,

शरीर नाशी और जड़ है।

सुख–दुःख आदि खटके

सम्बन्ध से होते हैं।

10 सितम्बर

जैसे बादल पवन के संचार से चलता है, वैसे ही जीव भी साक्षी चेतन के चमत्कार से ही चलता है।

11 सितम्बर

यह संसार एक वन है,

जिसमें अनन्त जीव

गुम हैं। पता नहीं

वे कहां जा रहे हैं।

12 सितम्बर

दुनिया में कहने वाले

बहुत हैं परन्तु करने

वाले थोड़े हैं।

13 सितम्बर

यह जीव बबर शेर के
समान है परन्तु इसे
चाहना रूपी चूहे ने ऐसा
पकड़ा है जो दुःखी
होकर चिल्ला रहा है।

14 सितम्बर

अपने सुख के लिये

दूसरों को दुःख नहीं

देना चाहिये।

15 सितम्बर

जीव का पाप कर्म ही

परलोक में यमदूत

बनकर इसे दुःख

देता है।

सर्वानन्द सन्देश

16 सितम्बर

अनात्म अभिमानी ही

यमपुरी में जाकर

धर्मराज को लेखा

देता है और कोई नहीं।

17 सितम्बर

नहीं जानें तो भी वही है,

अगर जानें तो भी वही है,

परन्तु जानना अच्छा है।

18 सितम्बर

आप संसार में रहो

परन्तु संसार आप

में न रहे।

19 सितम्बर

आप सब जीवों के

हितकारी बन जाओ।

सबका भला करते रहो।

20 सितम्बर

भारत माता को

सादगी से सींगारो,

फैशन से नहीं।

21 सितम्बर

यह जीव नफे की

दावा छोड़े तो घाटा

कभी न पड़े।

22 सितम्बर

अपने धर्म और जाति

से प्यार करो, दुश्मन

मत बनो।

23 सितम्बर

तितिक्षा, वैराग्य और विश्वास, जिज्ञासु को भगवान से जल्दी मिलाते हैं।

24 सितम्बर

परमात्मा आलसियों

को देखकर घबरा

जाता है।

25 सितम्बर

जो दूसरों के माल

पर दावा जमायेगा,

वह मार खायेगा।

26 सितम्बर

पुण्यात्मा और विवेकी

पुरुषों का संग

करना।

27 सितम्बर

पारब्रह्म में सारी सृष्टि

कल्पित है। जैसे सोने

में भूषण।

28 सितम्बर

साक्षी चेतन के प्रकाश

से सारी प्रकृति

प्रकाशित है।

29 सितम्बर

यह आत्मा इन्द्रियों का

विषय नहीं है परन्तु

अनुभव में आता है।

30 सितम्बर

यह चैतन्य निर्मल

नूर है। जहां तहां

भरपूर है।

1 अक्टूबर

संसार मन में है,

आत्मा में नहीं।

2 अक्टूबर

बड़े बनो तो सहारा

करो। छोटे बनो तो

आज्ञा मानो।

3 अक्टूबर

परमात्मा के पदार्थों

पर सब जीवों का

अधिकार है।

4 अक्टूबर

जैसे पानी में नाव

रहती है वैसे आप

संसार में रहो।

5 अक्टूबर

मौके की सेवा

बड़ी फलदायक

होती है।

6 अक्टूबर

दुनिया में चुप जैसी

मीठी वस्तु और कोई

नहीं है।

7 अक्टूबर

जिसने भी कुछ पाया है,

पुरुषार्थ से। पुरुषार्थी

की जय है।

8 अक्टूबर

धर्म, मर्म, शर्म और

मर्यादा ये भारतीयों

के भूषण हैं।

९ अक्टूबर

इस जीव को अपने कर्म

ही सुख–दुःख देते हैं

और कोई नहीं।

10 अक्टूबर

मन जैसा शत्रु कोई

नहीं है परन्तु मन जैसा

मित्र भी कोई नहीं।

11 अक्टूबर

जो अपना यश

चाहता है, उसका

अपयश होगा।

12 अक्टूबर

सब जनता की सेवा

भगवान की ही

सेवा है।

13 अक्टूबर

जल्दी करने से

देरी हो जाती है।

14 अक्टूबर

यह जीव साक्षी

चेतन सूर्य का

प्रतिबिम्ब है।

15 अक्टूबर

मैं और मेरा, ये दो पदार्थ
दुखदायी हैं। जब तक इन
दो पदार्थों का त्याग नहीं
करेंगे, तब तक परम
शांति प्राप्त नहीं होगी ।

16 अक्टूबर

ये माता का धर्म है कि,
बच्चों को बहादुर बनाए,
वीर बनाए, धर्मात्मा
बनाए, हरि भक्त
बनाए। ये माता पिता
के इख्तियहार है।

17 अक्टूबर

जो अनादि सनातन आपका भवन है, मकान है वो पाओ। उसी में जाकर सुख पाओ जिसमें दुख का लेश भी नहीं है। उसी अविनाशी देश में चलो ।

सर्वानन्द सन्देश

18 अक्टूबर

इस दुनिया की दावा

छोडे बिना शान्ति

नहीं मिलेगी।

19 अक्टूबर

मन को विश्वास बंधावे।

मन बड़ा कठिन

विश्वास बांधता है।

विश्वास के बगैर

काम बनेगा भी नहीं।

20 अक्टूबर

भगवान को प्रगट करने
के लिए, खुश करने के
लिए बहुत साधन है,
परन्तु एक साधन प्रधान
है, कौन सा ? प्रेम ।

21 अक्टूबर

मन भोग और भक्ति में
से एक तरफ ही जायेगा,
किन्तु भक्ति में मन
लगाये बिना शान्ति
नहीं मिलेगी।

22 अक्टूबर

पुरूषार्थ करेंगे तो उससे बंद भाग्य भी खुल जाएगा। भाग्य नहीं होगा तो भी बन जाएगा ।

सर्वानन्द सन्देश

23 अक्टूबर

मौके का साधन समय का
साधन बड़ा फलदायक है।
किसी बड़भागी को
प्राप्त होता है।

24 अक्टूबर

जो शांति की आपको
चाहत है, आशा है तो
संसार की इच्छा को
दग्ध करो, जलाओ।
ये सनातन जो आपका
सत्‌चित आनंद निज
स्वरूप है, वो पाओ।

25 अक्टूबर

सच के उपदेश करने वाले दुनिया में दुर्लभ हैं। स्वार्थ के बगैर सच का उपदेश करना बिलकुल दुर्लभ है ।

सर्वानन्द सन्देश

26 अक्टूबर

अगर जो शांति चाहते हो
तो पहले आप शांति
करो। आप भटक रहे
हो तो शांति कैसे आयेगी।
पहले आप शांति करो
तो फिर शान्ति आए।

27 अक्टूबर

आपने ममता की मोह की
ये, गठड़ी सिर पर रखी है
इसको उतारो नहीं तो
अंतकाल ऐसी भारी होगी
कि इसके नीचे आप
चूरण हो जावेंगे।

28 अक्टूबर

ईश्वर सृष्टि सुखदायी है उसमें विचरो। अपनी सृष्टि न बनाओ । अपनी सृष्टि, जीव सृष्टि है दुख रूप। ईश्वर सृष्टि में विचरो।

29 अक्टूबर

जो दुनिया से तरे हैं,
जिसने परम पद की
प्राप्ति की है, उन्होंने
करनी करी है भगवान
संत, गुरू का आधार
लेकर ओट लेकर
पुरूषार्थ किया है ।

30 अक्टूबर

मिलना है तो मिलो
प्रभु से! इसी जन्म का
बिछुड़ा जुगाजुग का
बिछुड़ा। इसी जन्म का
मिला जुगा जुग का मिला।

सर्वानन्द सन्देश

31 अक्टूबर

क्या सूरज में अंधेरा है ? अंधेरा सूरज में देखा है कभी ? नहीं। वैसे आप में दुःख नहीं है। ये दुःख आप तो खरीद किया है ।

सर्वानन्द सन्देश

1 नवम्बर

चाहे इन्द्र का राज मिल जावे तो भी आत्मज्ञान के बगैर इस जीव की भूख दूर नहीं होगी ।

2 नवम्बर

भगवान संत, सदगुरू
किसी भी और पदार्थ या
बात पर प्रसन्न नहीं होंगे
अगर प्रसन्न होंगे तो
केवल दो बातों पर एक
प्रेम दूसरी सेवा ।

3 नवम्बर

निष्काम निर्मान सेवा ही
बड़े में बड़ी सेवा है उससे
अन्तःकरण की
शुद्धि होगी।

4 नवम्बर

सत्संग से विवेक मिलेगा,
विवेक से विचार मिलेगा
और विचार से ही
शान्ति होगी ।

सर्वानन्द सन्देश

5 नवम्बर

संसार की आशा (इच्छा)

पूरी कभी नहीं होगी

एक पूरी होगी तो

दूसरी उठेगी।

6 नवम्बर

प्रारब्ध से, शास्त्र की
मर्यादा से जो कुछ मिले
तो वो भली ग्रहण करो।
बाकी बहुत आशा चाहना
और तृष्णा न करो ।

7 नवम्बर

क्रोध अग्नि के समान है जैसे अग्नि घर को भस्म कर देती है वैसे क्रोध रूपी अग्नि सारे दैवीय संपदा के गुणों को, धर्म को नाश कर देती है ।

सर्वानन्द सन्देश

8 नवम्बर

मन की बुरी आदत

बदलकर उसे सत्‌मार्ग में

लगाना भी बड़ी भक्ति है।

9 नवम्बर

सत्गुरू दयालु है, सत्गुरू जैसा दयालु भगवान भी नहीं है क्योंकि भगवान लेखा करेंगे गुरू महाराज लेखा नहीं करेंगे।

10 नवम्बर

माता पिता बालकों में
जैसे संस्कार डालेंगें,
बालक वैसे ही होंगे,
बालकों को सत्गुणों
से पालो क्योंकि बालक
माता पिता की शरण
में आते हैं।

11 नवम्बर

व्यवहार का अथवा परमार्थ का काम कोई भी होवे दिल से हृदय से खुशी से करेंगे तो बनेगा। बाहर से करेंगे तो नहीं बनेगा।

12 नवम्बर

मोह रूपी नींद से जागना बहुत कठिन है। कोई विरला बड़भागी ही जागता है।

13 नवम्बर

जो भोजन शुद्ध, शान्त,
पवित्र, प्रसन्न मन और
अपने हाथों से बनाया
जाता है, वह भले ही
रूखा–सूखा क्यों न
हो पर अमृत का
काम करता है।

सर्वानन्द सन्देश

14 नवम्बर

जो भोजन अशुद्ध अपवित्र, अशान्त, अप्रसन्न मन से बनाया जाता है, वह भले ही, चिकना–चुपड़ा रसदार और स्वादिष्ट क्यों न हो, पर जहर का काम करता है।

15 नवम्बर

बच्चों का दिल शुद्ध, निर्मल, पवित्र और अविकारी होता है, उन्हें जो सिखाना चाहो, वह सीख जायेंगे। जिस वातावरण में वे रहेंगे, वह उनके हृदय पर अंकित हो जायेगा।

सर्वानन्द सन्देश

16 नवम्बर

संसार सागर से वह ही तरेगा, जो परमात्मा की अनन्य भक्ति करेगा।

17 नवम्बर

भगवत प्राप्ति के लिए
संसार, संसार के पदार्थ,
संसार से सम्बन्ध, जहां
तक संसार के नेह
और नाते हैं, उन सबकी
आसक्ति को
त्यागना पड़ेगा।

सर्वानन्द सन्देश

18 नवम्बर

अिस (तलवार) की धार पर नंगे पाव चलना कठिन है, परन्तु फकीरी (साधुपन) के मार्ग पर चलना तो उससे भी कठिन हैं

सर्वानन्द सन्देश

19 नवम्बर

काम, क्रोध तथा लोभ, ये
तीन गहरे गड्ढे है, ये ही
नरक के दरवाजे हैं।

20 नवम्बर

जैसे परमात्मा सर्व

व्यापक है वैसे ही

सतुगुरु को भी सर्व

व्यापक जानना।

21 नवम्बर

रात के बाद दिन, दिन के बाद रात, यह रात–दिन का चक्कर चलता रहता है, सब लोग इस चक्कर में पिसते जा रहे हैं।

22 नवम्बर

गुरु की भक्ति सरल नहीं है, प्रेम लगाना तो सरल है, पर अन्त तक निभाना बहुत कठिन है।

23 नवम्बर

ज्ञान, ध्यान, आत्म
विचार, नियम, प्रेम,
शील, संतोष, उत्तम
बुद्धि इत्यादि कुछ भी
गुरु की कृपा बिना
नहीं मिल सकता।

24 नवम्बर

जिसको गुरु कृपा का

कण मिल जाता है,

उसकी समस्त क्रियाएँ

बदल जाती हैं।

25 नवम्बर

उदारता का गुण मन पर है, धन पर नहीं, बड़प्पन का गुण बुद्धि पर है, आयु पर नहीं।

26 नवम्बर

संसार भी एक भूल भुलैया है। इसमें सत्त्व, रज और तम इन गुणों से उत्पन्न होने वाली वृत्तियां, जो बहुत घुमाव–फिराव वाली गलियाँ हैं।

27 नवम्बर

जिसने भगवान को जाना है, उसको सत्पुरुष कहते हैं। उनके संग को ही सत्संग कहते हैं।

28 नवम्बर

ये अमोलक मानव
जीवन आवगमन मिटाने
के लिए मिला है, इतना न
हो सके तो अपना
परलोक बनाना चाहिए।

29 नवम्बर

जिस विशाल वैभव को देखकर आप आनन्द विभोर हो रहे हो, वह कब तक ? जब तक आपके नेत्र खुले हुए है। परन्तु नेत्र बन्द होने पर सब कुछ समाप्त हो जायेगा।

सर्वानन्द सन्देश

30 नवम्बर

बुद्धिमान ज्ञानवान लोग
अपनी कीर्ति सुनकर
सकुचा (मुरझा) जाते
हैं और निन्दा आलोचना
सुनकर बहुत प्रसन्न
होते हैं।

1 दिसम्बर

यह मनुष्य सबको

छोड़कर अकेला ही

परलोक की यात्रा

करता है।

2 दिसम्बर

प्रारब्ध (होनी) ही संयोग वियोग कराती है, जहां जिसका दाना–पानी होता है, वहां उसको खींचकर ले जाती है।

3 दिसम्बर

आत्म ज्ञान का अधिकारी

वह है, जिसमें सहन

शक्ति है।

4 दिसम्बर

जब आप अज्ञान की नींद

से जागेंगे तो यह सारा

जगत स्वप्न की तरह

हो जायेगा।

5 दिसम्बर

काल की गति बहुत धीमी है, पर उसका शब्द इतना बड़ा भारी है, जो बहुत दूर–दूर तक सुनने में आता है। इतना होने पर भी सब लोग उसको सुन नहीं सकते हैं।

6 दिसम्बर

धन सम्पत्ति, ऐश्वर्य से मोहित मनुष्य कल्याण पथ से भ्रष्ट हो जाता है।

7 दिसम्बर

सत्य का व्यवहार, शुद्ध आहार एवं भगवान का भजन करना प्रत्येक मनुष्य का परम धर्म है।

8 दिसम्बर

पशु पक्षी भी अपने धर्म
से विचलित नहीं होते हैं,
अतः मनुष्य को तो अपने
धर्म की हर कीमत पर
रक्षा करनी चाहिए।

९ दिसम्बर

राम कृपा उसको प्राप्त

होती है, जो पहले अपने

आप पर कृपा करता है।

10 दिसम्बर

विवेक से सब कुछ बनेगा। ये जन्म मरण का, आवागमन का फेरा विवेक से छूटेगा। भगवान का दर्शन भी विवेक से होगा। ये इन्द्रियों का विषय नहीं है।

11 दिसम्बर

अगर कोई कहे कि संसार का खटका (झंझट) बन्द हो, फिर भजन करुं, ऐसा कभी नहीं होगा, इस खटके में ही शान्ति प्राप्त करनी है।

12 दिसम्बर

आप यदि मन रूपी घोड़े को भक्ति ज्ञान रूपी जल पिलाना चाहते हो तो, इस व्यवहार रूपी खटके के चलते जल पिला दो।

सर्वानन्द सन्देश

13 दिसम्बर

जिससे ये सब प्राणी उत्पन्न होते हैं। उत्पन्न होकर जिसमें जीते हैं फिर जिसमें लीन होते हैं। उसको जानने की इच्छा करो वह ही निर्गुण निराकार ब्रह्म है।

14 दिसम्बर

पर्वत से गिर जाना

अच्छा है पर मूर्ख का संग

भला नहीं है। मूर्ख का

संग सर्वदा दुखदाई है।

15 दिसम्बर

मूर्ख एवं मनमुख मनुष्य किसी भी कार्य के परिणाम का विचार नहीं करते हैं।

16 दिसम्बर

वेद शास्त्रों को
पढ़–लिखकर भी
जिनका मन सांसारिक
सुखों को बटोरने में लगा
रहता है, उससे बढ़कर
दूसरा कोई मूर्ख नहीं है।

सर्वानन्द सन्देश

17 दिसम्बर

बिना गुरु के शास्त्रों का ज्ञान सागर के जल के समान है, पर गुरु कृपा से वह ज्ञान वर्षा का जल बनकर शिष्य को प्राप्त होता है।

18 दिसम्बर

वे अज्ञानी जीव जिनको ज्ञान चक्षु नहीं हैं, वे जन्म से लेकर मरणपर्यन्त रज, तम और सत्व गुणों रूपी रस्सियों से पशु की भाँति बन्धे रहते हैं।

19 दिसम्बर

जो सब अवलम्बन
(सहारे) छोड़कर केवल
भगवान का भरोसा लेता
है, भगवान उसके
सहायक बन जाते हैं।

सर्वानन्द सन्देश

20 दिसम्बर

आत्म समर्पण के अर्थ को
कोई विरला ही जानता
है, जानने वालों में से
कोई बिरला ही आत्म
समर्पण कर पाता है।

21 दिसम्बर

जहां आत्मज्ञान रूपी

प्रकाश है, वहां शोक

मोह रूपी अन्धकार

नहीं रहता है।

22 दिसम्बर

पतिव्रता के तेज और
शक्ति की तुलना
(बराबरी) सूर्य और
अग्नि भी नहीं कर
सकते हैं।

23 दिसम्बर

माता का आशीर्वाद कभी

भी व्यर्थ नहीं जाता है।

वह बड़ा काम करता है।

24 दिसम्बर

भगवान भक्ति पर प्रसन्न होता है, पर भक्ति करना सरल नहीं है। भक्त पर बड़े कष्ट आते हैं।

25 दिसम्बर

सन्त महात्मा लोग जादूगरों
की तरह कोई जादू या
चमत्कार नहीं दिखाते।
उनकी सबसे बड़ी सिद्धि
यही है कि मनुष्य के कठोर
क्रूर स्वभाव को ही
बदल देते हैं।

सर्वानन्द सन्देश

26 दिसम्बर

यदि इस मानव देह में
भगवान न मिल सका,
तो फिर संसार चक्की
में पिसना पड़ेगा।

27 दिसम्बर

दयालू भगवान ने अपनी

दया करके इस जीव

को यह देव दुर्लभ

मनुष्य देह दी है।

सर्वानन्द सन्देश

28 दिसम्बर

अवसर पर किया गया
एक कौड़ी दान भी बिना
अवसर पर दिये गये एक
लाख दान पर भारी है।

29 दिसम्बर

अपने मन को मारे बिना

आज तक न किसी ने

मोक्ष पाया है, न भविष्य

में ही कोई पा सकेगा।

30 दिसम्बर

हे मेरे सज्जन मन!
जितने भी लोग इस
संसार सागर से तरे हैं,
वो सब अपनी करनी
(पुरुषार्थ) से ही तरे हैं।

31 दिसम्बर

आचरण में लाये बिना

ज्ञान, ध्यान, कथन

और उपदेश सब

व्यर्थ चले जाते हैं।